

सेफरॉन बाउल प्रोजेक्ट

प्रलिस के लयः

केसर, केसर बाउल परयोजना, प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग और पहुँच के लयः उत्तर-पूरव केंद्र, केसर के लयः अन्य सरकारी पहल ।

मेन्स के लयः

सरकारी नीतयः और हस्तकषेप, केसर की खेती और इसका महत्त्व ।

चर्चा में क्यः?

हाल ही में केसर बाउल परयोजना/सेफरॉन बाउल प्रोजेक्ट (Saffron Bowl Project) के तहत नॉर्थ ईस्ट सेंटर फॉर टेक्नोलॉजी एप्लीकेशन एंड रीच (NECTAR) ने केसर की खेती के लयः अरुणाचल प्रदेश और मेघालय में कुछ स्थानों की पहचान की है ।

- पूरे प्रोजेक्ट की कुल लागत अरुणाचल प्रदेश और मेघालय के लयः 17.68 लाख रूपए नरिधरति की गई है ।
- NECTAR **वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी वभिग** (DST) के तहत एक स्वायत्त नकिय है जसिने भारत के उत्तर-पूरव कषेत्र में समान गुणवत्ता और उच्च मात्रा के साथ केसर उगाने की व्यवहार्यता का पता लगाने हेतु एक पायलट परयोजना का समर्थन कयः है ।

उत्तर-पूरव में केसर की खेती के वसितार का कारणः

- प्रारंभ में केसर का उत्पादन कश्मीर के बहुत कम और वशिष्ट कषेत्रों तक ही सीमति था ।
- हालाँकि राष्ट्रीय केसर मशिन के तहत केसर का उत्पादन बढ़ाने हेतु कई उपाय कयः गए, लेकिन उत्पादन हेतु कषेत्र बहुत सीमति था, साथ ही केसर उगाने वाले कषेत्रों में पर्याप्त बोरवेल सुवधि का अभाव था ।
- भारत में परतविरष करीब 6 से 7 टन केसर की खेती होती है, जबकि देश में केसर की मांग 100 टन है ।
- केसर की बढ़ती मांग को पूरा करने के लयः वजिज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, वजिज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वभिग के माध्यम से पूरवोत्तर के कुछ राज्यों (प्रारंभ में सकिंकिमि और बाद में मेघालय एवं अरुणाचल प्रदेश) में इसकी खेती के वसितार पर वचिर कर रहा है ।
- कश्मीर और पूरवोत्तर के कुछ कषेत्रों के बीच जलवायु एवं भौगोलिक परसिथतयः में भारी समानता है ।
 - अरुणाचल प्रदेश में फूलों के साथ जैविक केसर की अच्छी खेती होती है । मेघालय में चेरापूजी, मौसमाई और लालगिटॉप स्थलों पर सैपल के तौर पर वृक्षारोपण कयः गया है ।
- यह कृषि में भी वविधिता लाएगा और उत्तर-पूरव में कसानों को नए अवसर प्रदान करेगा ।

केसर और इसका महत्त्वः

- **केसरः**
 - केसर एक पौधा है जसके सूखे वर्तकिगूर (फूल के धागे जैसे हसिसे) का उपयोग केसर का मसाला बनाने के लयः कयः जाता है ।
 - माना जाता है कि पहली शताब्दी ईसा पूरव के आस-पास मध्य एशयिई प्रवासयः द्वारा कश्मीर में केसर की खेती शुरू की गई थी ।
 - यह बहुत कीमती और महँगा उत्पाद है ।
 - प्राचीन संस्कृत साहितयः में केसर को 'बहुकम (Bahukam)' कहा गया है ।
 - केसर की खेती वशिष प्रकार की 'करेवा' (Karewa) मटिटी में की जाती है ।
- **महत्त्वः**
 - इसका उपयोग **स्वास्थ्य, सौंदर्य प्रसाधन और औषधीय प्रयोजनों** के लयः कयः जाता है ।
 - इसका उपयोग पारंपरिक रूप से **कश्मीरी वयंजनों** में भी कयः जाता है जो इस कषेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक वरिसत का प्रतनिधित्व करता है ।

केसर की कृषि हेतु मौसम एवं आवश्यक दशाएँ:

■ मौसम:

- भारत में केसर की खेती **जून और जुलाई** के महीनों के दौरान तथा कुछ स्थानों पर **अगस्त एवं सितंबर** में की जाती है।
- इसमें **अक्टूबर माह** में फूल आना शुरू हो जाता है।

■ दशाएँ:

- **ऊँचाई:** समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊँचाई केसर की खेती के लिये अनुकूल होती है।
- **मृदा:** इसे अलग-अलग प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है लेकिन **6 और 8 pH मान वाली Calcareous** (वह मट्टि जिसमें प्रचुर मात्रा में कैल्शियम कार्बोनेट होता है) मट्टि में केसर का अच्छा उत्पादन होता है।
- **जलवायु:** केसर की खेती के लिये एक उपयुक्त गर्मी और सर्दियों वाली जलवायु की आवश्यकता होती है, जिसमें **गर्मियों में तापमान 35 या 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक न हो तथा सर्दियों में लगभग -15 या -20 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता हो।**
- **वर्षा:** इसके लिये पर्याप्त वर्षा की आवश्यकता होती है यानी **प्रतिवर्ष 1000-1500 ममी.** है।

भारत में केसर उत्पादन क्षेत्र:

- केसर का उत्पादन लंबे समय तक जम्मू और कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश में एक सीमिति भौगोलिक क्षेत्र तक सीमिति रहा है।
- पंपोर क्षेत्र जिसे आमतौर पर कश्मीर में **'केसर के कटोरे'** के रूप में जाना जाता है, केसर उत्पादन में मुख्य योगदानकर्ता है।
 - कश्मीर का पंपोर केसर, भारत में विश्व स्तर पर **महत्त्वपूर्ण कृषि वारिसत प्रणालियों (Globally Important Agricultural Heritage Systems)** के मान्यता प्राप्त स्थलों में से एक है।
- केसर का उत्पादन करने वाले अन्य ज़िले बडगाम, श्रीनगर और कश्तिवाड़ हैं।
- हाल ही में कश्मीरी केसर को **भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग** का दर्जा मिला है।

अन्य पहल:

- केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2010 में नलकूपों और फव्वारा संचाई सुविधाओं के निर्माण में सहायता प्रदान करने के लिये **राष्ट्रीय केसर मशिन** को मंजूरी दी गई थी, जो केसर उत्पादन के क्षेत्र में बेहतर फसल प्राप्त करने में मदद करेगा।
- हाल ही में **हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology)** और **हिमाचल प्रदेश सरकार** ने संयुक्त रूप से दो मसालों (**केसर और हींग**) का उत्पादन बढ़ाने का फैसला किया है।
 - इस योजना के तहत IHBT, नरियातक देशों से केसर की नई कस्मों को लाएगा तथा भारतीय परिस्थितियों के अनुसार इसको मानकीकृत (Standardized) करेगा।

स्रोत: पी.आई.बी.